“अंड्०कोर का राजवंशीय इतिहास”

“Dynastic History of Angkor”

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. of A. I. H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

M. A-II nd Semester,

Dept. of A. I. H. & Archaeology,

Patna university

Paper/cc-6 political history

Of South East Asia

राजा इन्द्रवर्मा:- जयवर्मा तृतीय की 877 ईस्वी में मृत्यु के पश्चात् इन्द्रवर्मा कम्बुज के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। इसके पश्चातत् इसने कम्बुज के शासन को अपने हाथों में ले लिया। इन्द्रवर्मा के विषय के बारे में 879 ई० के एक अभिलेख से प्रकाश पड़ता है। इसी अभिलेख से इन्द्रवर्मा और जयवर्मा II के वंश के साथ संबंध का भी पता चलता है। यह अभिलेख सियमरप प्रदेश में रूलो के प्रहा-श्वो मंदिर में उत्कीर्ण है। इस अभिलेख के अनुसार इन्द्रवर्मा 'क्षत्रिय' पृथ्वी चन्द्रवर्मा का पुत्र था, और उसकी माता श्री रूद्रवर्मा की पुत्री तथा श्रीनृपतीन्द्रवर्मा की दोहित्रि थी। इसी

श्री रूद्रवर्मा की भानजी का विवाह राजा जयवर्मा II के साथ हुआ था, और जयवर्मा तृतीय के साथ अपनी माता की ओर से सम्बंध भी था। अत: संभवत: इन्द्रवर्मा ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसका जयवर्मा तृतीय के साथ संबंध था। निकट संबंधी होने के नाते ही उसे राजसिंहासन प्राप्त हुआ था। इन्द्रवर्मा तथा इसके उत्तराधिकारियों का जितने अभिलेख मिले हैं, उनमे जयवर्मा II और जयवर्मा तृतीय का आदरपुर्वक उल्लेख किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि षड्यंत्र या विद्रोह के द्वारा उसने कम्बुज का राज्य नही प्राप्त किया अपितु पारिवारिक संबंध होने के कारण राजसिहासन प्राप्त किया था।

इन्द्रवर्मा का विवाह इन्द्रदेवी नामक कुमारी के साथ हुआ था, जो एक अभिलेख के अनुसार राजा महीपतिवर्मा की पुत्री थी। इसी लेख के अनुसार महीपतिवर्मा का पिता राजेन्द्रवर्मा था और उसकी माता नृपतीन्द्र देवी थी। इसी के अनुसार राजेन्द्रवर्मा का संबंध उस प्रतापी राजा पुष्कराक्ष के साथ भी था, जिस द्वारा अनिन्दितपुर और शम्भुपुर के राज्यो को मिला कर एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की गई थी। इसमें संदेह नहीं कि इन्द्रवर्मा स्वयं राजकुल से संबंधित था।

इन्द्रवर्मा का पिता पृथ्वीन्द्रर्मा भी एक प्रकार का सामंत राजा था, और जयवर्मा तृतीय के कोई सन्तान न होने के कारण इन्द्रवर्मा ने अपने पारिवारिक संबंधो के कारण कम्बुज के राजसिंहासन को प्राप्त कर लिया था। संभवत: इन्द्रवर्मा द्वारा कम्बुज के राज्य की प्राप्ति में शिवसोम इसका प्रधान सहायक था। राजा इन्द्रवर्मा का राज्यकाल (887-889 ई०) था। उसके अभिलेखों से यह सूचित होता है कि वह एक प्रतापी राजा था, और चीन, चम्पा तथा यवद्वीप(जावा) में उसके आदेशो का पालन होता था। इन्द्रवर्मा ने

चम्पा के साथ-साथ यवद्वीप(जावा) को भी अपना वशवर्ती बना लिया था। ये दोनो भी कम्बुज के समान ही अधिक शक्तिशाली थे। प्रसत-कंडोल अभिलेख में चम्पा और यवद्वीप के साथ चीन का भी इन्द्रवर्मा के वशवर्ती राज्य के रूप में उल्लेख किया गया है। इन्द्रवर्मा केवल विजेता ही नही कला का भी प्रेमी था। उसने स्वयं एक सिंहासन, एक इन्द्रयान (एक प्रकार का वाहन) और इन्द्रविमानक तथा इन्द्रप्रसादक नाम के दो राजप्रसादो का प्रारूप तैयार कर निर्माण शुरू कराया। उसने शिव और दुर्गा की भी तीन-तीन मुर्तियाँ स्वयं बनायी थी।

यशोवर्मा:- इन्द्रवर्मा के बाद उसका पुत्र यशोवर्धन 889 ई० में यशोवर्मा नाम से कम्बुज देश के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसकी शिक्षा वामशिव नामक आचार्य के देख रेख में हुई। वामशिव से शिक्षा प्राप्त कर यशोवर्मा शिक्षा, काव्य, विद्या तथा साहित्य में अनुपम हो गया। एक अभिलेख के अनुसार उसके राज्य की सीमा समुद्र तक थी। (चीनसंधि पयोधिम्या मितोर्वीयेन पालिता)।

यशोवर्मा के अभिलेखो में राजा द्वारा बनवाये गये मन्दिरो और आश्रमो आदि का सुविस्तृत रूप से वर्णन है। उस द्वारा उत्कीर्ण प्राह वात स्तेल शिलालेख में 50 श्लोक है, और उसकी प्रतियाँ विविध स्थानो पर उपलब्ध हुई है। इन विविध अभिलेखों द्वारा यशोवर्मा के समय के धार्मिक तथा सामाजिक जीवन पर बहुत प्रकाश पड़ता है। यशोवर्मा स्वयं शैव धर्म का अनुयायी था, पर बौद्ध धर्म के प्रति भी उसकी आस्था थी। अभिलेखो के अनुसार यशोवर्मा के शासन काल में कम्बुज राज्य अत्यंत समृद्धशाली थी, जनता सुखी एवं संपन्न थी। यशोवर्मा द्वारा यशोधरपुर नगरी बसायी गई थी।

वर्तमान अङ्कोर थोम के सुविस्तृत क्षेत्र मे वह नगरी भी आ गई, जिसकी स्थापना यशोवर्मा द्वारा की गई थी।

यशोवर्मा के उत्तराधिकारी:- यशोवर्मा के बाद उसके दो पुत्र हर्षवर्मा I और ईशानवर्मा II कम्बुज देश के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए। इनके पश्चात् जयवर्मा चतुर्थ कम्बुज देश का राजा बना। यह यशोवर्मा का बहनोई था।

जयवर्मा चतुर्थ:- जयवर्मा चतुर्थ ने अपने स्याल (पत्नी के भाई) यशोवर्मा के पुत्रो के विरूद्ध विद्रोह कर शक्ति प्राप्त की थी, और इसलिए यशोधरपुर के स्थान पर कोहकेर मे अपनी नई राजधानी का निर्माण किया था। यह स्थान अङ्कोर थोम के 50 मील उत्तर-पूर्व में है। जयवर्मा चतुर्थ ने वहाँ जिस नगरी का निर्माण कराया था उसके भग्नावशेष अब भी विद्यामान है। इन भग्नावशेष मे एक मुख्य मंदिर, वराह गौण मन्दिर तथा एक कृत्रिम जलाशय के खण्डहर उल्लेखनीय है। इस राजा द्वारा बनाये हुए मंदिरो तथा उसमें प्रतिष्ठापित मुर्तियों का वर्णन अनेक अभिलेखो में विद्यामान है।

जयवर्मा चतुर्थ के शासनकाल में कम्बुज देश की सेनाओ द्वारा चम्पा पर आक्रमण किया गया था। चम्पा का राजा उनके समक्ष टिक नही पाया। 942 ई० मे इसकी मृत्यु हो गई, और मृत्यु के पश्चात् इसे 'परमशिवपद' का विरुद प्रदान किया गया था।

हर्षवर्मा II:- जयवर्मा चतुर्थ के बाद उसका पुत्र हर्षवर्मा II कम्बुज देश के सिंहासन पर आररूढ़ हुआ। इस राजा के शासनकाल कालीन दो अभिलेख उपलब्ध है। एक फनोम बायन अभिलेख दुसरा वातक्देई कार स्तेल का अभिलेख है। इस राजा का शासनकाल बहुत अल्प था उसने केवल

दो साल ही राज्य किया। मृत्यु के पश्चात् हर्षवर्मा II के लिए 'ब्रह्मलोक' विरुद का प्रयोग किया गया था।

राजेन्द्रवर्मा - अनेक अभिलेखो मे राजेन्द्रवर्मा को हर्षवर्मा II का बड़ा भाई कहा गया है। राजा यशोवर्मा की दो बहने थी, जयदेवी और महेन्द्रदेवी। जयदेवी का विवाह जयवर्मा चतुर्थ के साथ हुआ था, और उसके पुत्र का नाम हर्षवर्मा II था। राजेन्द्रवर्मा का कुल चाहे कोई भी क्यो न हो, पर इसमे सन्देह नही कि वह एक प्रतापी राजा था। उसके शासनकाल की प्रधान घटना यशोधरपुर को फिर से कम्बुज देश की राजधानी बनाना है। इसने चम्पा आदि अनेक परराष्ट्रो पर विजय प्राप्त की थी। अभिलेख मे इसे कालाग्नि के समान कहा है। 968 ई० मे जब इस राजा की मृत्यु हुई, तो उसके लिए 'शिवलोक' विरुद का प्रयोग किया गया। अपने जीवनकाल मे ही उसने अपने पुत्र जयवर्मा को युवराज के पद पर नियुक्त कर दिया था। राजेन्द्रवर्मा स्वयं हिन्दू धर्म का अनुयायी था, और उसने शिव, पार्वती, विष्णु, ब्रह्मा और राजेन्द्रेश्वर शिव की अनेक मुर्तियाँ मंदिरो मे प्रतिष्ठापित करवायी थी।

जयवर्मा पञ्चम:- अपने पिता की मुत्यु के पश्चात् 968 ई० मे जब जयवर्मा पञ्चम कम्बुज देश का राजा बना, तो उसकी आयु अधिक नही थी। उसने 33 वर्ष तक राज्य किया और 1001 ई० मे उसकी मृत्यु हुई। मृत्यु के पश्चात् उसे 'परमवीरलोक' विरुद दिया गया। जयवर्मा पञ्चम के शासनकाल (998-1001) की कोई महत्वपूर्ण घटना ज्ञात नही होता है।

1001 ई० मे जयवर्मा पञ्चम की मृत्यु के पश्चात् कम्बुज के राजसिंहासन के लिए गृहकलह प्रारम्भ हो गया और अनेक व्यक्तियो ने अपने को राजा घोषित कर दिया। जयवर्मा पञ्चम की मृत्यु के बाद के दस वर्षो का इतिहास प्राय: अस्पष्ट है। इसमे संदेह नहीं, है कि 1001 ई तक सूर्यवर्मा अपने

विपक्षियो को परास्त कर कम्बुज देश पर अपना अधिपत्य सुदृढ रूप से स्थापित कर चालीस वर्ष तक इस राजा ने सुव्यवस्थित रूप से कम्बुज देश का शासन किया।